॥ ॐ पार्श्वनाथाय ह्रीं ॥ ॥ जैनं जयति शासनम् ॥ ॥ ॐ पद्मावत्यै ह्रीं ॥
॥ ॐ ह्रीं श्री उवसग्गहरं पार्श्वनाथाय नमः ॥
॥ आत्म-कमल-लब्धिसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥
॥ जयंत-विक्रम-नवीनसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥

जिनदर्शन
पूजन विधि



लेखक : पू. रत्नयशसूरि म.सा.

संपादन एवं शुभाशिषदाता :
लब्धि विक्रम गुरुकृपाप्राप्त गच्छाधिपति पूज्य
आचार्यदेव राजयशसूरीश्वरजी म.सा.

जिनदर्शन पूजन विधि

संपादन एवं शुभाशिषदाता :
पू. आचार्यदेव राजयशसूरीश्वरजी म.सा.

लेखक विद्वान :
पू. आचार्यदेव रत्नयशसूरीश्वरजी म.सा.

प्रकाशक :
श्री लब्धि विक्रम सूरीश्वरजी संस्कृति केन्द्र
T/7/A, शांतिनगर, अहमदाबाद-380 093

लाभार्थी :
श्रमणोपासिका सुधाबेन अनिलचंद्र महेता
64, 4th Cross, Thanthai Periyar Nagar,
Pondicherry-605005 (M) 90254 55296

प्राप्ति स्थान :

- मयंक अ. महेता
  पोंडीचेरी
  (M) 90254 55296
- जतिन के. शेठ
  चेन्नई
  (M) 98401 22900
- विकास अ. महेता
  कोइम्बतुर (M) 98434 72763

प्रति : 2000 • मूल्य : ₹ 27

मुद्रक : जय जिनेन्द्र ग्राफिक्स-नवरंगपुरा, अहमदाबाद-14
जय जिनेन्द्र 98250 24204, कुश 99256 17992

तृतीय आवृत्ति पर आशीर्वचन...

कहा गया है "नमोऽस्तु कलये यत्र, त्वत् दर्शनम् अजायत" नमस्कार हो वह कलिकाल को जिसमें हमें सर्वज्ञ-वीतराग के दर्शन हो गये । पू. आचार्यदेव श्री हेमचंद्रसूरीश्वरजी महाराज के वचन नई दिशा का चिंतन है । प्राप्त साधनों का उपयोग न करना और अप्राप्त की झंखना में पड़े रहना मानव की आदत बन गई है । वस्तुतः निर्बल और निर्भागी मनुष्य का ही यह सूत्र होता है कि "क्या करें, हमें साक्षात् भगवान नहीं मिले हैं ।" सद्भागी आत्मा कहते हैं कि "विषम काल में भी हमें जिन वचन एवं जिन प्रतिमा की प्राप्ति हुई है - यह हमारा सम्पूर्ण सौभाग्य है ।"

मानना ही पड़ेगा विगत वर्षो में एक सामान्य श्रावक की धर्म जिज्ञासा बढ़ी है ।

"धर्म क्रिया केवल देख देखकर ही नहीं, बल्कि पूछ पूछकर ही करनी चाहिए, ऐसा मनोभाव बढ़ा है। बहुत से युवा, अनेक धर्म पिपासु वयस्क, धर्म क्रिया के रहस्यों के विषयों में पूछते ही रहते हैं। हमारे शिष्य विद्वान आचार्य **रत्नयशसूरि**ने इस सारे प्रश्नों को अपने मन में रखकर एक पुस्तक का संयोजन किया था। बंबई फोर्ट के उपाश्रय में थे, तब उसका गुजराती भाषा में प्रकाशन हुआ था। पुस्तिका छोटी एवं प्रस्तुत होने से मांग बढ़ती ही रही है। ज्ञान पिपासु उपाध्याय **विश्रुतयश** वि.ने हिन्दी भाषी लोगों के लिए प्रस्तुत पुस्तिका को पुनः संपादन करके तैयार की है। दोनों ही शिष्यों का प्रयास सफल हो... यही आशिष तथा साथ में और भी युवा मानस उपयोगी साहित्य के प्रकाशन एवं संपादन में दोनों ही शीघ्र सफल बने रहे... यही मनोकामना है।

पाठक वर्ग से अनुरोध है कि अधिक से अधिक जिज्ञासुओं तक यह सर्वज्ञ के वचनों का प्रकाश पहुंचाने का प्रयास करें।

'**जिन दर्शन - जिन पूजा**' एक धार्मिक क्रिया तो है ही, पर मानव जीवन का सर्वोत्कृष्ट आनंद है... विश्वपिता तीर्थंकरों के चरणों में भक्ति विभोर बनके ध्यान की धारा में बह जाना कोई सामान्य उपलब्धि नहीं है। विश्व के कोई भी मनोरंजक कार्यक्रम से लाखों गुणी मनोरंजकता जिन दर्शन एवं जिन पूजा में है। "निजानंद की परम मस्ती" का निर्दोष-निरव और विश्व कल्याणकर कार्यक्रम है - "जिन दर्शन - जिन पूजन"। बस पाठक गण आगे बढ़े और परमात्मा के वीतरागी - सर्वज्ञ स्वरुप को समझकर कह उठें - '**सोऽहं - सोऽहं - सोऽहं**' बस आप आप नहीं हो मैं ही हूं - मैं ही हूँ बस आप परमात्मा हो वही मैं हूँ। बस ध्याता-ध्येय का पर्दा टूट जायेगा और परमानंद की प्राप्ति ही बनी रहेगी समस्त जीव परमानंद की प्राप्ति करें... यह अभिलाषा...

विजय राजयशसूरि

अहमदाबाद, दि. 1 March, 2023

नोंध : प्रथम गुजराती एवं द्वितीय हिन्दी आवृत्ति 1995 आदि में बनी थी।

श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय
पोंडीचेरी

देवगुरु धर्म की कृपा से जिनालय निर्माणकर्ता
महेता परिवार–पोंडीचेरी

Mehta Family

Mehta Family

: लाभार्थी :
महेता परिवार–पोंडीचेरी

न्याय पारंगत, ज्योतिष विशारद विद्वान वक्ता प.पू.आचार्यदेव श्री रत्नयशसूरीश्वरजी महाराजा

- **संसारी नाम :** श्री राजेशभाई कान्तिलाल गांधी
- **माता :** जशवंतीबहेन
- **पिता :** कान्तिलालभाई
- **भाई :** दिनेशभाई, कमलेशभाई
- **बहन :** ज्योत्सनाबहेन, तरुबहेन
- **जन्म :** कार्तिक वद–11 **(श्री पद्मप्रभ मोक्ष कल्याणक)** वि.सं. 2012, दि. 9-12-1955 (कलकत्ता)
- **दीक्षा :** वैशाख सुद–7 **(श्री धर्मनाथ स्वामी च्यवनकल्याणक)** वि.सं. 2030 दि. 28-4-1974
- **दीक्षा भूमि :** भाटसण (डीसा) (201 दिन का कलकत्ता से पालीताणा का ऐतिहासिक छ'री पालित संघ)
- **दीक्षा दाता :** प.पू. गुरुदेव आचार्यदेव श्री विक्रमसूरीश्वरजी महाराजा ।
- **गुरुदेव :** गीतार्थ गच्छाधिपति पू. आचार्यदेव श्री राजयशसूरीश्वरजी महाराजा ।
- **वडी दीक्षा :** अषाढ़ सुद–10, वि.सं. 2030 दि. 29-6-1974 (आरीसा भुवन–अनंत सिद्धों की भूमि पालीताणा)
- **उपाध्याय पद :** चैत्र वद–13 **(श्री अनंतनाथ जन्मकल्याणक)** (वि.सं. 2061, दि. 6-5-2005 (वर्धमान नगर, नागपुर)
- **आचार्य पद :** मागसर सुद–३, वि.सं. 2064, दि. 30-11-2008 (रसुलपुरा, सिकन्द्राबाद)
- **उपाध्याय - आचार्य पद प्रदाता :** गीतार्थ गच्छाधिपति पू. आचार्यदेव श्री राजयशसूरीश्वरजी महाराजा ।
- **कालधर्म :** वि.सं. 2079, महा वद–6, दि. 12-2-2023, सुबह 10.40 बजे (श्री लब्धि विक्रम नगर, सोला रोड, अहमदाबाद) **(श्री सुपार्श्वनाथ केवलज्ञान कल्याणक)**

महान आराधक पू. आचार्यदेव श्री रत्नयशसूरीश्वरजी म.सा. अड़िग योद्धा



महा वद-6, दि. 12-2-2023 रविवार

पूज्यों को वंदना...अनुवंदना...सुश्रावक योग्य धर्मलाभ...

पू. आचार्य श्री रत्नयशसूरि, समुदाय के महामूल्य रत्न होने से तमाम साधु-भगवंत तथा साध्वीजी-भगवंतो को सतत उनकी सेवा करने के मनोरथ रहा करते थे। इसी वजह से उनके लिए अनेक बार विविध जाप, अनुष्ठानों हुआ करते थे। मुझे नडियाद मागसर सुद-10 की प्रतिष्ठा के लिए जाना अनिवार्य था। परंतु रत्नयशसूरि को ले जाना शक्य नहीं था। इसलिए उन्होंने मुझे जल्दी लौट जाने की भावना रखी। सेवा के लिए पू. मुनिराज श्री देवेशयशविजयजी म.सा. तथा पू. मुनिराज श्री यशेशयशविजयजी म.सा. को रखना पड़ा।

आचार्य वीतरागयशसूरि, का मेरे साथ हर कदम-कदम पर रहना अनिवार्य था। इसलिए मैं वीतरागयशसूरि, उपाध्याय विश्रुतयशविजयजी तथा सदा सेवा उत्साही मुनिश्री त्रिलोकयशविजयजी नडियाद गए। उसके बाद पोष दशमी की आराधना के लिए धणप तीर्थ जाना पड़ा। परंतु बीच में एक बार रत्नयशसूरि को शाता पूछने सोला रोड आ गया। खूब ही प्रसन्नता से उन्होंने मुझे मोडासा तथा तारंगा की प्रतिष्ठा के लिए जाने की संमति दी। उस समय भी तबियत में कोई नया प्रश्न नहीं था।

तारंगा से अहमदाबाद महा वद-12/13, दि. 17/18-2-2023 को वापिस लौटने का था। तथा महा वद-५/६ दि. 11/12-2-2023 के दिन मेरा 60वाँ दीक्षा वर्ष प्रवेश का कार्यक्रम वीजापुर में तपागच्छाधिपति पू. मनोहरकीर्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा., परम मित्र समान उदयकीर्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में था। परंतु वहाँ सतत ध्यान रखनेवाले मुनि यशेशयशविजयजी का समाचार आया कि तबियत खूब बिगड़ रही है। हॉस्पिटल

J4\E:\Guru_Rajyashsuri (2018)\Jindarshan Book (2023)\Jindarshan Book 16323
1st 17323 • 2nd 24323 • 3rd 30323 • 4th 20423

ले जाना पड़ेगा । यह सुनकर आचार्य वीतरागयशसूरिने कहा कि शीघ्र स्टर्लींग होस्पिटल पहुँच जाईए । वहाँ पर सम्पूर्ण व्यवस्था श्री बीनीशभाई चुडगरने कर दी है तथा परम गुरुभक्त समान डो. श्री सुधीरभाई वहाँ के जवाबदार डोक्टर है ।

मैं तथा आचार्य वीतरागयश ता. 9-2-2023 शाम को होस्पिटल पहुँच गए । हमसे पूर्व सुबह आचार्य रत्नयशसूरि के साथ मुनि यशेशयशविजयजी पहुँच गए थे । थोडी ट्रीटमेन्ट से तबियत में सुधार हुआ था । हम वहाँ समय पर पहुँच गए थे, उनके चेहरे पर प्रसन्नता थी । वंदन तथा चौविहार का पच्चक्खाण हमसे लेकर प्रसन्नता व्यक्त की । पूरी रात मुनि यशेशयशविजयजी उनकी सेवा के लिए जागते रहे । आई.सी.यु. में होने के बावजूद बारबार दो-दो घण्टे वीतरागयश तबियत देखकर मुझे रीपोर्ट देते रहते । ता. 10-2-2023 की रात तबियत ठीक ठीक थी । ता. 11-2-2023 को उनकी भावना के मुताबिक सोला रोड में लाने वाले थे क्योंकि वे बार बार कहते रहे कि

"मुझे सोलारोड में ही रखना" । अनेक संघो से विनंती आई कि हमें पू. सूरिजी की सेवा का मौका मिले किंतु सूरिजी की जो अंतिम इच्छा थी उसी के मुताबिक करना था । दि. 11-2-2023 को सुबह तबियत कुछ ज्यादा बिगड़ी । एक खेंच आई और वे बेहोश हो गए । उस रात खूब ही चिंतापूर्ण व्यतीत हुई । दि. 12-2-2023 को सुबह 5.30 बजे एम्ब्युलन्स में सोला रोड लाए गए । वहीं पर होस्पिटल के जैसी पूरी तैयारी कर दी थी । उपाश्रय में लाने के बाद सुबह पच्चक्खाण करवा के नारियल का पानी वपराया । 10 बजे के बाद तबियत कुछ ज्यादा बिगडने लगी । नवकार मंत्र की धून चालू रखी । साथ ही महाव्रतों को उच्चराया । जिस तरह "तेल की कमी के कारण दीपक बूझ जाता है !" बस इसी तरह सूरिजी ने भी 10.40 बजे अपने प्राण छोड़े । 4.00 बजे उनका अग्नि संस्कार सोला रोड के प्रांगण में हुआ ।

सूरिजी जीवदया प्रेमी, स्वाध्याय प्रेमी तथा मधुर भाषी थे । एक गुरुभक्त की इच्छा के मुताबिक उनकी मूर्ति सोला

रोड संघ में स्थापित की जाएगी । वे जहाँ भी होंगे वही से वे, मुझे एवं मेरे समुदाय को सहाय करेंगे । सर्वत्र 'जैनम् जयति शासनम्' का नाद गुंजाएँगे ।

द : विजय राजयशसूरि की वंदना-अनुवंदना

सुश्रावकवर्य योग्य धर्मलाभ

महा वद-9, बुधवार, दि. 15-2-2023
सोला रोड, अहमदाबाद

पू.आ. रत्नयशसूरीश्वरजी म.सा. की स्तुति

अजब गजब की फकीरी जैसा,
आपने जीवन जीया,
स्वाध्याय-संयम-प्रमार्जना का,
ध्येय को ही मुख्य किया ।
प्रवचन-प्रभावना-हितोपदेश की,
मधुर धारा से मुग्ध किया,
सूरि रत्नयश ! त्रिरत्नों से,
आपने जीवन को चमका दिया ॥

J4\E:\Guru_Rajyashsuri (2018)\Jindarshan Book (2023)\Jindarshan Book 16323
1st 17323 • 2nd 24323 • 3rd 30323 • 4th 20423



राजेश का महाभिनिष्क्रमण...

कलकत्ता तुलापट्टी एरिया में रहनेवाला युवक तीर्थ प्रभावक पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय विक्रमसूरीश्वरजी म.सा. और पू. मुनि राजयशविजयजी (उस समय के) म.सा. के प्रवचनों में आते थे । धर्म श्रवण तो हृदय में आरपार उतर जाता था । दीक्षा प्राप्ति के उमंगो इसके पूर्व से ही थे । दीक्षा की अनुमति मिलना अशक्य था । राजेश अभी अट्ठारह वर्ष के हुए नहीं, परंतु वे मजबूत थे । दुविधा में जरूर थे । प्रवास करने का साहस था, परंतु दिशा नहीं मिल रही थी। उनका दिल सतत दिशा की खोज में था । मन के मनोरथो अपार थे ।

श्रावण सुद-5 के दिन पू. लब्धिसूरीश्वरजी म.सा. की गुणानुवाद सभा में सुना था कि लालचंदभाई ने (पू. लब्धिसूरि म.सा. ने) भागकर दीक्षा ली थी । पू. मुनि



राजयशविजयजी म.सा. के अभ्यास की अनूठी शैली, विलक्षण विरागीता को देखकर राजेश ने एक बार निवेदन किया, शायद मुझे भी भागकर ही दीक्षा लेनी पड़ेगी इस प्रकार कहते हुए उनके चहेरे पर चमक थी । पूज्यश्री ने फरमाया, 'पहले घर वालों को समझाना पड़ेगा ।'

कॉलेज का सुंदर अभ्यास चल रहा था । 18 वर्ष की उम्र में थोडा समय बाकी था ।

कलकत्ता से शत्रुंजय तीर्थ (पालीताणा) का छ'री पालित संघ का प्रयाण तय हुआ । संघ आधा पहुँचे तभी 18 वर्ष पूर्ण हो रहे थे । दृढ़ निश्चय पूर्वक राजेश ने पू. गुरुदेव श्री विक्रमसूरीश्वरजी म.सा. को बताया - 'गुरुदेव ! आप मुझ पर कृपा करना... मैं घर से भागकर आऊँ तब मुझे दीक्षा दे देना ।' छ'री पालित संघ का प्रयाण हुआ । महिने बीत गए । डीसा गाँव के बाहर एक बहादूर सैनिक की तरह राजेश उपस्थित हुआ । कितना अद्‌भुत साहस !

पू. गुरुदेव श्री विक्रमसूरीश्वरजी म.सा. भी १४ वर्ष की उम्र में छाणी से भागकर दीक्षा के लिए चाणस्मा गए । वैसे तो उन्होंने अपने पिताजी को भी साथ में भगाकर दीक्षा ली थी । अब राजेश भी उसी मार्ग पर चलने को तैयार हुए ।

दूसरे दिन यानि वैशाख सुद-7, दि. 28-4-1974 के दिन छ'री पालित संघ की भाटसण मुकाम पर स्थिरता थी । सैंकडो यात्रिकों को आश्चर्य हुआ । अरे ! किसी अनजान - विरागी युवान की दीक्षा हो रही है और कोई कल्पना नहीं कर सकता था और दीक्षा हो गई । पू. गुरुदेव श्री विक्रमसूरीश्वरजी म.सा. ने अपने प्रिय (राजा) राजयशविजयजी म.सा. के प्रथम शिष्य के रूप में मुनि श्री रत्नयशविजय म.सा. को नाम से जाहिर किया ।

कहते है,

न मुहूर्त्त - न विधि - न वायणा, न बेन्ड-बाजा,
न कोई महोत्सव विगेरेका भी आयोजन ! ।



ऐसे भी दीक्षा के लिए महोत्सव की क्या आवश्यकता है । "**साधु जीवन यानि प्रतिदिन जिनाज्ञा - पालन महोत्सव**" कहना पड़ेगा कि,

राजेश की दीक्षा सिर्फ **निष्क्रमण नहीं था अपि तु महाभिनिष्क्रमण था ।**

वैसे भी वे पढ़ने में होंशियार, जहाँ मतलब नहीं निकलता उन बातों में समय बिगाड़ते नहीं, दूसरी और पूज्य गुरुदेव के पास शास्त्रों के मर्म को सहज तरीके से सुनते ।

दादा गुरुदेव पू. श्री विक्रमसूरीश्वरजी म.सा. की परम कृपा एवं योग्यता से ही जैन आगम - न्याय शास्त्र तथा अनेक अभ्यास के बाद सामने से ज्योतिष शास्त्रों का अभ्यास करने की आज्ञा मिली ।

कभी ज्योतिष विषय का सावद्य प्रयोग न हो उसकी सतत जागृति रखते थे !

गुरु की आज्ञा के वगैर किसी को भी कुछ बताना नहीं ।

J4\E:\Guru_Rajyashsuri (2018)\Jindarshan Book (2023)\Jindarshan Book 16323
1st 17323 • 2nd 24323 • 3rd 30323 • 4th 20423

ज्योतिष शास्त्र को कुछ लोग पाप विद्या कहते है परंतु सुयोग्य पात्र को पुण्य विद्या बताई है ।

जिनके पास से थोड़ा भी ज्ञान मिलाया हो उसे जीवनभर याद रखना । इन गुणों के साथ-साथ उन्होंने कभी अपने पूज्यों तथा गुरु की सेवा में पीछे हठ नहीं किया । खुद आचार्य बनने के बाद भी गुरुचरण की सेवा छोटे बच्चे की तरह करते थे तभी उन्हें चेन पड़ता था ।

न किसी के प्रति अति राग, न किसी के प्रति द्वेष

ऐसे महान आचार्य जिन्होंने अपने गुरु का...

अपने दादा गुरुदेव का तथा लब्धि समुदाय का नाम रोशन किया तथा

शासन की सेवा करके धन्य बने...

J4\E:\Guru_Rajyashsuri (2018)\Jindarshan Book (2023)\Jindarshan Book 16323
1st 17323 • 2nd 24323 • 3rd 30323 • 4th 20423

प्रश्न-१ : मंदिर में जाने की क्या जरुरत है ?

उत्तर : मनोवैज्ञानिक का कहना है कि आसपास का वातावरण मन के उपर असर करता है। हम जब पेन्सिल, पेन इत्यादि देखते हैं तब लिखने का दिल होता है। हथियार देखते हैं तब लड़ने का दिल होता है। बाजार में जाते हैं तब वस्तु खरीदने की, बेचने की और पैसा कमाने की इच्छा होती है। किसी की शादी में जाते हैं तब हमारे मन में ऐसा विचार आता है कि हम भी शादी करेंगे या मैंने भी शादी की थी। यह सब विचारों से इतना स्पष्ट है कि मन को अच्छे विचार देने के लिए अच्छे वातावरण में रहना चाहिए। जब हम उवसग्गरहं तीर्थ (नगपुरा) में या बनारस तीर्थ में मूलनायक **पार्श्वनाथ भगवान** का दर्शन करते हैं तब हमें याद आता है कि प्रभु पार्श्वनाथ दीक्षा लेकर ध्यान में रहे, तब कमठ नाम के देव ने भगवान के उपर बारिश बरसाई। प्रभु नासिका तक पानी में डूब गए। फिर भी भगवान ने कमठ के उपर जरा भी गुस्सा नहीं किया। धरणेन्द्र का आसन चलित हुआ और धरणेन्द्र देव ने प्रभु

को पानी से उपर ले लिया। प्रभु मस्तक के उपर साँप की फण रख दी, प्रभु की भक्ति की। फिर भी प्रभु को उसके उपर राग न हुआ। जब हम **शांतिनाथ भगवान** का दर्शन करते हैं, तब हमें याद आता है कि सर्वश्रेष्ठ देवलोक सर्वार्थ सिद्ध विमान में से आयुष्य पूर्ण करके प्रभु शांतिनाथ भगवान ने मनुष्य लोक में अपने पुण्य से चक्रवर्ती पदवी प्राप्त की, और चक्रवर्ती पद का त्याग करके दीक्षा ग्रहण की और तीर्थंकर हुए। शांतिनाथ भगवान के दर्शन से यह भी याद आता है कि प्रभुजी ने मेघरथ राजा के भव में शरण में आए हुए कबूतर की रक्षा के लिए प्राणों का बलिदान देने की तैयारी बताई थी। जब हम **महावीर प्रभु** के दर्शन करते हैं तब हमें विचार आता है कि एक ओर प्रभु के एक पाँव में चंड़कौशिक साँप डंख लगाता है और दूसरी ओर इन्द्र महाराज सेवा करते हैं फिर भी प्रभु को चंड़कौशिक साँप पर द्वेष नहीं है और इन्द्र के उपर राग नहीं है। इस प्रकार मंदिर में भगवान का दर्शन करते मन में अच्छे विचार आते हैं।

अतः मन में अच्छे विचार लाने के लिए मंदिर में जाना चाहिए ।

प्रश्न-२ : भगवान की प्रतिमा की क्या आवश्यकता है ?

उत्तर : कोई अगर कहे कि 'मगनलाल' नाम के आदमी का ध्यान करो, लेकिन हमें मगनलाल कौन है ? उसका मुख कैसा है ? उनके गुण कैसे हैं ? इत्यादि अगर मालूम न हो तो 'मगनलाल' का ध्यान नहीं कर सकते । भगवान की प्रतिमा द्वारा हमें भगवान के अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत वीर्य, परमानंद आदि गुणों का ख्याल आता है अतः ध्यान और एकाग्रता प्राप्त करने के लिए प्रतिमा की जरुरत है ।

प्रश्न-३ : भगवान की पूजा क्यों करनी चाहिए ? और पूजा अनामिका अंगुली से ही क्यों करनी चाहिए ?

उत्तर : वैज्ञानिक दृष्टि से सबसे ज्यादा परमाणु का समूह पांव में से अलग होता है, नीचे गिरते हैं। हमारी प्राचीन परंपरा पांव की पूजा करने की है। "सम्मेत शिखर" आदि

तीर्थो में प्रभुजी की पादुकाएं ही ज्यादा है। हम व्यवहार में भी कहते हैं, माता पिता के पाँव पडो । दूसरी बात यह है कि वैज्ञानिक दृष्टि से परमाणु को ग्रहण करने की सबसे ज्यादा शक्ति अनामिका अंगुली के उपरके भाग में है । प्रभु प्रतिमा के चरण में से अलग हो रहे परमाणु हमारी अनामिका अंगुली द्वारा अपने शरीर में प्रवेश करें इस कारण से प्रभु की पूजा अनामिका अंगुली से करनी चाहिए ।

इतिहास में उदाहरण आता है कि श्रवण ने अंधे माता-पिता को कावड में बैठाकर तीर्थयात्रा कराई । हमें प्रश्न होता है कि माता-पिता अंधे हैं । प्रभुजी का दर्शन नहीं कर सकेंगे, फिर कावड में बैठाकर फिजुल में इतना परिश्रम करने की क्या जरुरत है। लेकिन श्रवण का कहना था, 'मेरे माता-पिता भगवान की प्रतिमा का दर्शन नहीं कर सकते तो परवाह नहीं, लेकिन भगवानने चरण-कमल जिस जगह पर रखा था उस जगह के परमाणु पवित्र हैं, अगर उस पवित्र परमाणु का स्पर्श भी माता-पिता करेंगे तो मन में अच्छे विचार आयेंगे ।'

अनामिका अंगुली का सम्बन्ध नश के माध्यम से हृदय के साथ जुडा हुआ है। अतः हृदय को संवेदनशील बनने के लिए प्रभुजी की पूजा, अनामिका अंगुली से होती है। अनामिका याने - जिसका नाम न हो। हमें ऐसी दशा प्राप्त करनी है, जहां कोई नाम न हो, रुप न हो, मन न हो, शरीर न हो, जहां तक संसार में है वहां तक मगनलाल, छगनलाल नाम है। सिद्ध होने के बाद अनामी बन जाते हैं। अनामी बनने के लिए अनामिका अंगुली से पूजा करनी चाहिए।

प्रश्न-४ : भगवान की जल पूजा, पुष्प पूजा, धूप पूजा, दीप पूजा करने से जीव हिंसा होती है। पूजा करने के पहले स्नान करना पड़ता है, उससे भी जीव हिंसा होती है। जब कि जिनेश्वर भगवंतो ने अहिंसा प्रधान धर्म की प्ररुपणा की है, इसलिए शंका होती है कि जलपूजा आदि करना उचित है या नहीं ?

उत्तर : भगवान की जल पूजा, पुष्प पूजा, धूप पूजा, दीप पूजा आदि कौन करता है और कौन नहीं करता। यह बात पहले विचार करने योग्य है।

पंच महाव्रतधारी साधु जल पूजादि, द्रव्य पूजा नहीं करते हैं। पौषध में रहा हुआ श्रावक द्रव्य पूजा नहीं करते हैं। सामायिक में रहा हुआ श्रावक दो घड़ी तक पाप व्यापार का त्यागी होता है। वह द्रव्यपूजा दो घड़ी तक नहीं करता है। और अगर कोई व्यक्ति ऐसा नियम करे कि, 'मैं कोई भी सचित्त वस्तु का स्पर्श नहीं करुंगा', तो उसे द्रव्यपूजा करने की जरुरत नहीं है, जो श्रावक ने पाप व्यापार का पच्चक्खाण नहीं किया है उसे प्रभु की द्रव्यपूजा करके सम्यग् दर्शन मिलाने का है। शास्त्र में आचार की व्यवस्था गुणवत्ता के हिसाब से बताई है, जैसे कि साधु को अंधेरे में चलने का निषेध किया है, जबकि **केवल-ज्ञानी मुनिसुव्रत स्वामीजी रात भर चल कर विहार कर के भरुच पधारे। अश्व को प्रतिबोधित किया। केवल-ज्ञानी** को जितना और जैसा ज्ञान दिन में है, उतना और वैसा ही ज्ञान रात को है। रात को विहार नहीं करना चाहिए। यह कानून साधु के लिए है, केवल-ज्ञानी के लिए नहीं

है । शास्त्र में कहा गया है "आचार्य संभूतिसूरि महाराज के एक शिष्य ने कूएँ के किनारे चार मास उपवास करके काउसग्ग किया । यहां प्रश्न होता है, प्रभु महावीर स्वामी के साधु भगवंतो को दो बार प्रतिक्रमण, दो वार पडिलेहण आदि आवश्यक क्रिया बताई है, तो यह मुनिने प्रतिक्रमण, पडिलेहण क्यों नहीं किया ? शास्त्र में कहा गया है यह मुनि अप्रमत्त चारत्र को धारण करने वाले हैं । जब प्रतिक्रमण, पडिलेहण आदि आवश्यक क्रिया प्रमत्त साधु के लिए हैं ।"

यह उदाहरण से हम समझ सकते हैं कि, कानून गुणवत्ता के हिसाब से भिन्न-भिन्न होते हैं । जो आत्मा ने हिंसा नहीं करने का पच्चक्खाण नहीं लिया है वह प्रभु की द्रव्यपूजा करके भगवान की आज्ञा पालता है और निर्मल सम्यग् दर्शन मिलाता है । जो आत्मा ने हिंसा नहीं करने का पच्चक्खाण लिया है, वह अहिंसा महाव्रत पालकर प्रभु की आज्ञा पालन कर सम्यग् चारित्र में आगे बढ़ता है । जिन पूजा में जो हिंसा होती है, वह

J4\E:\Guru_Rajyashsuri (2018)\Jindarshan Book (2023)\Jindarshan Book 16323
1st 17323 • 2nd 24323 • 3rd 30323 • 4th 20423

हिंसा देखने में हिंसा है । परिणाम में अहिंसा है क्योंकि वह जिनपूजा सम्यग् दर्शन, ज्ञान, चारित्र और अंत में मोक्ष तक ले जाती है । यदि जिन पूजा की हिंसा को हिंसा मानेंगे तो गुरु को वंदन करने गाड़ी में बैठकर नहीं जा सकेंगे । गाय को घास नहीं दे सकेंगे, रोगी को दवा, भोजन नहीं दे सकेंगे । साधर्मिक भक्ति नहीं कर सकेंगे । मंदिर-उपाश्रय का निर्माण भी नहीं कर सकेंगे ।

प्रश्न-५ : मंदिर में घंट क्यों बजाना ? मंदिर में शंख क्यों फूंके जाते हैं ?

उत्तर : मंदिरजी में घंट बजाने का वैज्ञानिक कारण यह है, कि घंट बजते ही हवा में आंदोलन उठते हैं । मंदिर में यदि कोई रोगिष्ठ व्यक्ति भी आ गया तो उसके श्वासोश्वास से यदि वातावरण दूषित हुआ हो तो घंट के माध्यम से हवायी आंदोलन से दूषित हवा शुद्ध हो जाती हैं । कोई भी वायरस इन्फेक्शन नहीं होता है । एवं प्रभु पूजा से हुए आनंद को व्यक्त करने के लिए घंट बजाया जाता है । शंख फूंकने में भी यही कारण बताया गया है ।

J4\E:\Guru_Rajyashsuri (2018)\Jindarshan Book (2023)\Jindarshan Book 16323
1st 17323 • 2nd 24323 • 3rd 30323 • 4th 20423

प्रश्न-६ : मंदिर में धूप-दीप जलाने का क्या कारण हैं ?

उत्तर : मंदिर में धूप-दीप जलाने से हवा की शुद्धि होती हैं। मंदिर का वातावरण सुगंधित बनता हैं। जिससे मन की निर्मलता भी होती हैं। मन को प्रभु भक्ति में स्थिर करने का कारण धूप-दीप बन सकता हैं। अधिष्ठायक आकृष्ट होते हैं।

दीपक '**ज्ञान**' का प्रतीक है। प्रभु की सर्वज्ञता के प्रति हमारा आदर होता है। धूप पूजा की खुशबू जीवन में दुर्वासनाओं के त्याग को प्रेरित करती हैं।

प्रश्न-७ : परमात्मा का तिलक आज्ञाचक्र में ही क्यों करना चाहिए ?

उत्तर : विदेशों में कुमकुम के विषय पर संशोधन हुआ है। इस आविष्कार को नोबल पुरस्कार भी प्राप्त हुआ हैं। यह बात हमे जैन वैज्ञानिक त्रिलोक बाफनाजीने कही थी।

J4\E:\Guru_Rajyashsuri (2018)\Jindarshan Book (2023)\Jindarshan Book 16323
1st 17323 • 2nd 24323 • 3rd 30323 • 4th 20423

भाल में तिलक करने का हेतु यहीं है कि, हम तिलक के जरिये यह स्वीकार करते हैं कि "परमात्मा की आज्ञा हम शिरोधार्य करते हैं।" इस आज्ञापालन से मनोबल दृढ होता हैं।

तिलक करने का जो स्थान भाल है, वहाँ आज्ञाचक्र में शुभ ऊर्जा पेदा होती हैं।

दश त्रिक का चार्ट

निसीहि त्रिक (१)

(१) पहली निसीहि
(२) दूसरी निसीहि
(३) तीसरी निसीहि

प्रदक्षिणा त्रिक (२)

(१) पहली प्रदक्षिणा
(२) दूसरी प्रदक्षिणा
(३) तीसरी प्रदक्षिणा

प्रणाम त्रिक (३)

(१) अंजलिबद्ध प्रणाम
(२) अर्धावनत प्रणाम
(३) पंचांगप्रणिपात प्रणाम

पूजा त्रिक (४)

(१) अंग पूजा
(२) अग्र पूजा
(३) भाव पूजा

J4\E:\Guru_Rajyashsuri (2018)\Jindarshan Book (2023)\Jindarshan Book 16323
1st 17323 • 2nd 24323 • 3rd 30323 • 4th 20423

अवस्था त्रिक (५)

(१) पिंडस्थ अवस्था

(२) पदस्थ अवस्था

(३) रुपातीत अवस्था

दिशात्याग त्रिक (६)

(१) दायीं दिशा निरीक्षण का त्याग

(२) बायीं दिशा निरीक्षण त्याग

(३) पीछे की दिशा निरीक्षण का त्याग

प्रमार्जना त्रिक (७)

(१) भूमि प्रमार्जना

(२) हाथ-पाँव का प्रमार्जन

(३) मस्तक का प्रमार्जन

आलंबन त्रिक (८)

(१) जिनबिंब का आलंबन

(२) सूत्रों का आलंबन

(३) सूत्रार्थ का आलंबन

मुद्रा त्रिक (९)

(१) योग मुद्रा

(२) मुक्ताशुक्ति मुद्रा

(३) जिन मुद्रा

प्रणिधान त्रिक (१०)

(१) मन का प्रणिधान

(२) वचन का प्रणिधान

(३) काया का प्रणिधान

प्रश्न-८ : मुक्ताशुक्ति मुद्रा - जिनमुद्रा आदि मुद्राओं से क्या लाभ होता है ?

उत्तर : मुक्ताशुक्ति मुद्रा आदि में यौगिक आसन का समावेश होता है। शारीरिक-आत्मिक गुणों की पुष्टि होती

हैं। जिनमुद्रा से काउस्सग्ग में रहने से शरीर की स्थिरता टिकी रहती हैं।

प्रश्न-९ : जिनदर्शन और जिनपूजन की विधि क्या है ?

उत्तर : परमात्मा की पूजा करने की इच्छा वाले श्रावक को एक परात में बैठकर तीन लोटे पानी से स्नान करना चाहिए। उसके बाद परात के पानी को घास, चींटी, जीवादि न हो ऐसी रेत में पानी डालना चाहिए।

घर में से निकलने के बाद मन में शुभ भावना करते-करते मंदिर जाना चाहिए।

जिनालय जाने में कितना फल ?

- जिनालय जाने की इच्छा करें, तो एक उपवास का फल मिलता है।
- जिनालय जाने के लिए खडे हो, तब दो उपवास का फल मिलता है।
- जिनालय जाने हेतु पांव उठायें, तो तीन उपवास का फल मिलता है।

- जिनालय जाने के लिए चलना शुरु करे, तो चार उपवास का फल मिलता है ।
- जिनालय जाने हेतु थोड़े चलें, तो पांच उपवास का फल मिलता है ।
- जिनालय दिखने पर एक मास के उपवास का फल मिलता है ।
- जिनालय पहुंचने पर छः मास के उपवास का फल मिलता है ।
- जिनालय के द्वार के पास पहुंचने पर एक वर्ष के उपवास का फल मिलता है ।
- प्रभु को प्रदक्षिणा देने पर सौ वर्ष के उपवास का फळ मिलता है ।

देवाधिदेव की पूजा करने पर हजार वर्ष के उपवास का फल मिलता है ।

स्तुति-स्तवनादि करने पर अनंतगुणा पुण्य प्राप्त होता है ।

मंदिर के मुख्य द्वार के पास **निसीहि** बोलना चाहिए । **निसीहि का अर्थ है** - संसार संबंधी पाप व्यापार का त्याग। मंदिरजी में प्रवेश करने के बाद भाल के उपर लंबा तिलक करना और भगवान का दर्शन होते ही **'णमो जिणाणं' कह कर दो हाथ जोड़कर अंजलिबद्ध प्रणाम** करना । **'णमो जिणाणं'** का मतलब है राग-द्वेष को जिसने जीत लिया है, ऐसे जिनेश्वर भगवंतो को नमस्कार । उसके बाद प्रभुजी को तीन **प्रदक्षिणा** देना, प्रभु की तीन प्रदक्षिणा करने से **१०० साल के उपवास जितना फल प्राप्त होता है ।** प्रथम प्रदक्षिणा में सम्यग् दर्शन, दूसरी प्रदक्षिणा में सम्यग् ज्ञान, तीसरी प्रदक्षिणा में सम्यक् चारित्र की याचना करनी और प्रदक्षिणा का दोहा बोलना चाहिए ।

काल अनादि अनंतथी, भव भ्रमणानो नहि पार ।
ते भ्रमणा निवारवा, प्रदक्षिणा दऊं त्रणवार ॥
भमतीमां भमतां थका, भवभावठ दूर पलाय,
दर्शन-ज्ञान चारित्ररुप, प्रदक्षिणा त्रण देवाय ।

जन्म मरणादि सवि भय टले, सिजे जो वांछित काज,
रत्नत्रय प्राप्ति भणि, दर्शन करो जिनराज ॥

ज्ञान वडुं संसारमां, ज्ञान परम सुख हेत,
ज्ञान विना जगजीवडा, न लहे तत्त्व संकेत ॥

चय ते संचय कर्मनो रिक्त रहे वली जेह,
चारित्र नाम निर्युक्ते कह्युं, वंदो ते गुणगेह ॥

दर्शन ज्ञान चारित्र रुप, प्रदक्षिणा त्रण नीरधार ।
त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे, भव दुःख-भंजनहार ॥

उसके बाद प्रभुजी के सामने दो हाथ जोड़कर शरीर आधा झूका देना और **अर्धांग प्रणाम** करना, साथ ही प्रभुजी की स्तुति निम्नलिखित बोलना चाहिए ।

प्रभु दर्शन सुख संपदा, प्रभु दर्शन नवनिध ।
प्रभु दर्शनथी पामीए, सकल पदारथ सिद्ध ॥

भावे जिनवर पूजीए, भावे दीजे दान ।
भावे भावना भाविए, भावे केवल ज्ञान ॥

जीवडा जिनवर पूजीए, पूजा ना फल होय ।
राजा नमे, प्रजा नमे, आण न लोपे कोय ॥

फूलड़ां केरा बागमां, बेठा श्री जिनराज ।
जेम तारामां चंद्रमा, तेम शोभे महाराज ॥

वाडी चंपो मोरियो, सोवन पांखडीए ।
पास जिनेश्वर पूजीए, पांचे आंगलीए ॥

त्रिभुवन नायक तुं धणी, महा मोटो महाराज ।
मोटे पुण्ये पामीयो, तुम दरिशन हुं आज ॥

आज मनोरथ सवि फलिया, प्रगट्या पुण्य कलोल,
पाप करम दूरे टलिया, नाठा दुःख दंदोल ॥

उसके बाद मुखकोश बांधना, मुखकोश बांधने के बाद हाथ धोना जरुरी है । उसके बाद गभारा में प्रवेश करना । गभारा में प्रवेश के पहले **निसीहि बोलना** यह निसीहि द्वारा मंदिर संबंधी साफसूफी और रिपेरींग आदि कार्यों का चिंतन और विचारणा का भी त्याग करना । उसके बाद,

✣ अंगपूजा शुरु करना ✣

✣ जल पूजा का दोहा :

जलपूजा जुगते करो, मेल अनादि विनाश,
जलपूजा फल मुझ होजो, मांगो एम प्रभु पास ।

ज्ञान कलश भरी आतमा, समता रस भरपूर,
श्री जिन ने न्हवरावता, कर्म होय चकचूर ॥

चंदन पूजा का दोहा :

शीतल गुण जेमां रह्यो, शीतल प्रभु मुख रंग,
आत्म शीतल करवा भणी, पूजो अरिहा अंग ।
उसके बाद चंदन पूजा करनी चाहिए ॥

प्रभुजी के चरण के अंगुठे में पूजा करने के समय बोलने का दोहा -

जलभरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ।
ऋषभ चरण अंगूठड़े, दायक भवजल अंत ॥

प्रभुजी के ढींचण पर पूजा करने के समय बोलने का दोहा -

जानु बले काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश ।
खड़ा खड़ा केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥

कांडे के पर पूजा करने के समय बोलने का दोहा-

लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसीदान ।
कर कांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥

कंधेके पर पूजा करने के समय बोलने का दोहा -

मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत ।
भुजा बले भव जल तर्या, पूजो खंध महंत ॥

शिखा के पर पूजा के समय बोलने का दोहा -

सिद्धसिला गुण उजली, लोकान्ते भगवंत ।
वसीया तेणे कारण भवि, शिरशिखा पूजंत ॥

तिलक के पर पूजा करने के समय बोलने का दोहा-

तीर्थंकर पद पुण्य थी, त्रिभुवन जन सेवंत ।
त्रिभुवनतिलक समा प्रभु भाल तिलक जयवंत ॥

कंठ के पर पूजा करने के समय बोलने का दोहा -

सोल प्रहर प्रभु देशना, कंठे विवर वर्तुल ।
मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिणे गले तिलक अमूल ॥

हृदय के पर पूजा करने के समय बोलने का दोहा -

हृदय कमल उपशम बले, बाल्या राग ने रोष ।
हिम दहे वन खंड ने, हृदय तिलक संतोष ॥

* **नाभि के पर पूजा करने के समय बोलने का दोहा-**

रत्नत्रयी गुण उजली, सकल सुगुण विश्राम ।
नाभि कमलनी पूजना, करता अविचल धाम ॥

पूजा के लिए उपयोगी सूचना

१. भगवान के दाहिनी तरफ भाईओं को खड़े रहना चाहिए और बांयी तरफ महिलाओं को खड़े रहकर दर्शन-पूजन करना चाहिए ।

२. भाईओं को धोती, दुपट्टा पहनना । रुमाल से मुखकोश नहीं बांधना । दुपट्टा का आठ पड़ का मुखकोश बांधना।

३. प्रभुजी की पूजा नव अंग पर करने की शास्त्रीय विधि है । प्रभु पार्श्वनाथ भगवान की फणा की पूजा करने की विधि नहीं है ।

४. भगवान के लांछन की पूजा नहीं करनी चाहिए ।

५. प्रभुजी की पूजा नौ अंग पर करना चाहिए । नवमा अंग नाभि है । हाथ के तलिए के उपर पूजा करने की विधि नहीं है।

६. सिद्धचक्रजी की पूजा करने के बाद प्रभुजी की पूजा हो सकती है, क्योंकि सिद्धचक्र नौ-पद की पूजा है, व्यक्ति की पूजा नहीं ।

७. भगवान की पूजा करने के बाद, प्रवचन मुद्रा वाले गणधर भगवंत की पूजा कर सकते हैं। लेकिन प्रवचन मुद्रा वाले गणधर भगवंत की पूजा करके वही केशर से प्रभु की पूजा नहीं करनी चाहिए ।

८. प्रभु की पूजा करने के बाद शासन अधिष्ठायक देव देवी को अंगुठा से तिलक करना । अधिष्ठायक देव साधर्मिक गिने जाते हैं । शासन की सेवा विशेषरुप में करने में शक्तिमान है । इसलिए पद्मावती आदि देवी देवताओं का बहुमान योग्य है, वे विशेष शक्ति सम्पन्नता के कारण पूज्य हैं ।

९. अष्टमंगल का आलेखन प्रभु समक्ष करने की विधि है । लेकिन अष्टमंगल की पूजा करने की विधि नहीं है ।

* **निम्नलिखित पुष्पपूजा का दोहा बोलकर पुष्प पूजा करनी चाहिए ।**

सुरभि अखंड कुसुम ग्रही, पूजो गत संताप,
सुम-जंतु भव्यज परे, करिए समकित छाप ।

* **उसके बाद गभारा में से बाहर निकल कर अग्रपूजा करनी चाहिए । धूप पूजा का दोहा बोलकर धूप पूजा करनी चाहिए ।**

ध्यान घटा प्रगटावीए, वाम नयन जिन धूप ।
मिच्छत दुर्गन्ध दूरे टले, प्रगटे आत्म स्वरुप ॥

* **दीपक पूजा का दोहा बोलकर दीपक पूजा करनी चाहिए ।**

द्रव्य दीपक सुविवेक थी, करता दुःख होय फोक ।
भाव प्रदीप प्रकट हुए, भासित लोकालोक ॥

* **अक्षत पूजा का दोहा बोलकर अक्षत पूजा करनी चाहिए ।**

शुद्ध अखंड अक्षत ग्रही, नंद्यावर्त विशाल,
धरि प्रभु सम्मुख रही, टाली सकल जंजाल ॥

अक्षत पूजा करते समय अक्षत पद लेने की भावना से प्रथम सिद्धशिला का आकार करना । उसकी प्राप्ति दर्शन ज्ञान चारित्र से ही होती है । यह बात को सूचित करने के लिए तीन ढेरी करना और यह तीन मिलते ही चार गति का नाश होता है ये बताने के लिए ढेरीके नीचे स्वस्तिक करना । स्वस्तिक की चार दिशा की रेखा चार गति को सूचित करती है ।

* **नैवेद्य पूजा का दोहा बोलकर नैवेद्य पूजा करनी चाहिए ।**

अणाहारी पद में कर्यां, विग्गह गई अनंत,
दूर करी ते दीजिए, अणाहारी शिव संत ।

* **फल पूजा का दोहा बोलकर फल पूजा करनी चाहिए ।**

इन्द्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग ।
पुरुषोत्तम पूजी करी, मांगे शिवफल त्याग ॥

प्रभुजी की **अंगपूजा, अग्रपूजा** करने के बाद और **भाव पूजा रूप** चैत्यवंदन करने से पहले **निसीहि** बोलना

चाहिए। इस निसीहि से द्रव्य पूजा संबंधित विचारों का त्याग होता है। उसके बाद दुपट्टा से जमीन को **तीन बार प्रमार्जना** चाहिए और **तीन दिशा में देखने का त्याग** करके प्रभु समक्ष ही देखना चाहिए।

सर्वप्रथम ईरियावहिया करना। ईरियावहिया करते समय जिनमुद्रा करना। जिनमुद्रा का मतलब है प्रथम खड़ा रहना और दो पांव के आगे के भाग में चार अंगुली का अंतर, पीछे भाग में अढ़ाई अंगुली का अंतर रखना, शरीर स्थिर रखना और दो हाथ जोड़ना इसे **जिनमुद्रा कहते हैं। मन-वचन-काया की एकाग्रता से सूत्रका उच्चारण करना, एकाग्रता प्राप्त** करने के लिए **सूत्र आलंबन** याने सूत्र का शुद्ध उच्चारण वचन से करना। मन में अर्थ का चिंतन करना उसे **अर्थ आलंबन** कहते हैं। नेत्र काया का एक अंग है। नेत्र से प्रभु की प्रतिमा को देखना वह **प्रतिमा आलंबन** है।

एक लोगस्स नहीं आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग करना। **तीन खमासमणा** देना उसके बाद **योग मुद्रा** में चैत्यवंदन करना। दो हाथ दो कोहणी को कमल की दांडी की जैसी जोड़ना और नाभी उपर रखना। दोनों हाथों की अंगुली एक दूसरे में परस्पर जोड़कर रखना। दाहिना पाँव मोड़ना। बांया पाँव खडा रखना, इसका नाम **योग मुद्रा** है।

इच्छाकारणे संदिसह भगवन् (!), चैत्यवंदन करुं १ इच्छं !

सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्तमेघो,
दुरिततिमिरभानुः, कल्पवृक्षोपमानः।
भवजल-निधि-पोतः, सर्वसंपत्ति हेतुः,
स भवतु सततं वः, श्रेयसे शांतिनाथः श्रेयसे पार्श्वनाथः॥

बार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजे भावे,
सिद्ध आठ गुण समरता, दुःख दोहग जावे। (१)

आचारज गुण छत्रीस, पचवीश उवज्झाय,
सत्तावीश गुण साधुना, जपता शिवसुख थाय। (२)

अष्टोत्तर शत गुण मलीए, एम समरो नवकार,
धीर विमल पंडित तणो, नय प्रणमें नितसार । (३)

जंकिंचि - नमुत्थुणं - बोलना उसके बाद **मुक्ताशुक्ति मुद्रा** करना, दो हाथ के अंगुलियों को मिलाना । हाथ को मस्तक से मिलाना । अंदर से हाथ पोले रखना उसे **मुक्ताशुक्ति मुद्रा** कही हैं ।

इस मुद्रा में...

- जावंति चेइयाइं... उसके बाद खमासमणा देना ।
- इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि
- पीछे **मुक्ताशुक्ति** मुद्रा में जावंत केवि साहू कहना ।
- पीछे योग मुद्रा में "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" बोलना ।
- स्तवन अथवा उवसग्गहरं कहना ।
- पीछे **मुक्ताशुक्ति मुद्रा** में 'जयवीयराय' कहना ।

दोनों पाँव के आगे के भाग में चार अंगुली पीछे के भाग में अढ़ाई अंगुलीकी जगह रहे ऐसे खड़ा रहना और

"**अरिहंत चेइआणं, करेमि काउस्सग्गं । वंदण-वत्तिआए पूअण वत्तिआए** (प्रभुजी की **पिंडस्थ अवस्था** सोचना प्रभुजी का जन्म हुआ तव मेरु पर्वत पर भगवान की जल पूजा हुई इत्यादि **जन्म अवस्था** का चिंतन करना)

सक्कार वत्तिआए (प्रभु राजा हुए तब आभूषण आदि धारण करते हुए भी वैरागी थे उस **राज्य अवस्था** का चिंतन)

सम्माण वत्तिआए (प्रभुजीने दीक्षा लिया श्रमणावस्था तक देवताओं ने मनुष्यों ने प्रभु की स्तिुति की ।)

बोहिलाभ वत्तिआए (प्रभुजी की **पदस्थ अवस्था** का चिंतन करना । प्रभु को केवल ज्ञान हुआ और वाणी सुनाई तब जगत के जीवों को बोधि का लाभ हुआ ।)

निरुवसग्ग वत्तिआए : (प्रभु की सिद्ध-अवस्था का चिंतन करना ।)

सद्धाए... अन्नत्थ, एक नवकार का काउस्सग्ग, काउस्सग्ग पार कर नमोऽर्हत्... कल्लाण कंदं... (यह पुस्तक छोटा पुस्तक होने से सूत्रों का शब्दार्थ लिखा नहीं है। जिज्ञासु को सद्गुरु के पास महान सूत्रों का अर्थ जान लेना चाहिए।)

जिन मंदिर में प्रवेश और पूजा का क्रम

१. 'निसीहि' उच्चारण के साथ जिनालय में प्रवेश करें।

२. जिनेश्वर देव का मुखारविंद दिखते ही दोनों हाथ जोड़कर 'नमो जिणाणं' कह कर प्रभु को वंदन करना।

३. अर्धावनत प्रणाम करने के बाद तीन प्रदक्षिणा करें।

४. मधुर कंठ से प्रभु की स्तुति कहें।

५. दूसरी निसीहि कह कर गर्भद्वार में प्रवेश करें।

६. प्रतिमाजी पर रहा हुआ निर्माल्य उतारना।

७. प्रतिमाजी को मोरपींछी करना।

८. पानी का कलश करना।

९. मुलायम वस्त्र से केसर साफ करना।

१०. पंचामृत से अभिषेक करके शुद्ध जल से सफाई करें।

११. अभिषेक के समय घंटनाद, शंखनाद करें।

१२. पबासन को पाटलूंछणा से साफ करना, पाटलूंछणा दो रखें, एक पबासन को पोंछने के लिए तथा दूसरा नीचे का स्थान पोंछने हेतु।

१३. परमात्मा के अंगों को तीन बार विभिन्न अंग लूंछणों से पोंछना।

१४. बरास द्वारा विलेपन पूजा करनी चाहिए।

१५. जल पूजा, चंदन पूजा, पुष्प पूजा, धूप पूजा, दीपक पूजा, अक्षत पूजा, नैवेद्य पूजा, फल पूजा आदि क्रमानुसार करना। चामर ढालना।

१६. प्रभु को दर्पण दीखाना।

१७. मंदिर से बाहर आते वक्त आनंद के रुप में घंटनाद करना।

१८. यथास्थान अवस्था त्रिक की भावना करनी चाहिए।

१९. तीसरी निसीहि बोलकर दुपट्टे के किनारे से तीन बार नीचे की भूमि का प्रमार्जन करके चैत्यवंदन आरंभ करना ।
२०. चैत्यवंदन में दिशात्यागत्रिक, आलंबनत्रिक, मुद्रात्रिक और प्रणिधान त्रिक का पालन करना ।
२१. पूजा के उपकरण यथास्थान रखने चाहिए ।
२२. प्रभु की और पीठ न पड़े, इस प्रकार बाहर वापस आना ।
२३. परमात्मा के दर्शन पूजन से आत्मिक आनंद-सभर हृदय से स्वगृह की और वापस लौटना ।

चैत्यवंदन उवयोगी सूत्र

✤ खमासमण-प्रणिपात सूत्र ✤

इच्छामि खमासमणो । वंदिउं जावणिज्जाए ।
निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ॥ (फीर नीचे का पाठ पढ़े)

✤ ईरियावहियं सूत्र ✤

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । ईरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं,

J4\E:\Guru_Rajyashsuri (2018)\Jindarshan Book (2023)\Jindarshan Book 16323
1st 17323 • 2nd 24323 • 3rd 30323 • 4th 20423

इच्छामि पडिक्कमिउं, (१) ईरियावहियाए विराहणाए (२) गमणागमणे (३) पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे (४) जे मे जीवा विराहिया (५) एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया (६) अभिहया, वत्तिया, लेसिया,संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं । (७) (ईरियावहियं के बाद तस्स उत्तरी कहे)

✤ तस्स उत्तरी सूत्र ✤

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

✤ अन्नत्थ सूत्र ✤

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, (१) सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं,

J4\E:\Guru_Rajyashsuri (2018)\Jindarshan Book (2023)\Jindarshan Book 16323
1st 17323 • 2nd 24323 • 3rd 30323 • 4th 20423

सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं, (२) एव माइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो (३) जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि (४) ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि । (५)

अन्नत्थ के बाद एक लोगस्स न आये तो चार नवकार का काउस्सग्ग करना । 'नमो अरिहंताणं' कहकर काउस्सग्ग पारकर प्रकट लोगस्स कहें ।

लोगस्स सूत्र

लोगस्स उज्जोअ-गरे, धम्म तित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली (१)

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे (२)

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ (३)

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ (४)

एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ (५)

कित्तिय वंदिय महिया, जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ (६)

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु, ॥ (७)

फिर तीन खमासमण देना ।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी का चैत्यवन्दन

जय चिंतामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वामी ।
अष्ट कर्म रिपु जीतिने, पंचमी गति पामी ॥ (१)

प्रभुनामे आनंदकंद, सुख संपत्ति लहीए ।
प्रभुनामे भवभयतणा पातक सब दहीए ॥ (२)

ॐ ह्रीं वर्ण जोड़ी करीए, जपीए पारस नाम ।
विष अमृत थई परिणमें, लहीए अविचल ठाम ॥ (३)

✤ श्री जंकिंचि सूत्र ✤

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ (१)

✤ नमुत्थुणं सूत्र ✤

नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं । (१) आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं (२) पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंडरीआणं, पुरिसवर गंधहत्थीणं (३) लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोग हियाणं, लोग पईवाणं, लोग पज्जो-अगराणं (४) अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरण-दयाणं, बोहि दयाणं (५) धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्म सारहीणं, धम्म-वर-चाउरंत चक्कवट्टीणं (६) अ-प्प-डिहय वर-नाण, दंसण-धराणं वियट्टछउमाणं (७) जिणाणं-जावयाणं, तिन्नाणं-तारयाणं, बुद्धाणं-बोहयाणं, मुत्ताणं-मोअगाणं (८) सव्व-न्नूणं, सव्व-दरिसीणं, सिव-मयल - मरुअ - मणंत - मक्खय - मव्वाबाह, मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमोजिणाणं जिअभयाणं (९) जे अ अइया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि । (१०)

✤ जावंति चेइआइं सूत्र ✤

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहेअ तिरिअ-लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥
(खमासमण देना)

✤ जावंत के वि साहू सूत्र ✤

जावंत के वि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण ति-दंड-विरयाणं ॥

"नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः"

✤ पार्श्व जिन स्तवन ✤

(राग : आधा हे चन्द्रमा...)

वणछरा पार्श्व तने वंदु वारंवार, तने वंदु वारंवार,
मनथी ध्याऊं, तनथी ध्याऊं, वचने गाऊं रे वचने गाऊं रे.
वण... (१)

तारा मुखने जोई हरखुं, तने वारे वारे निरखुं
तो ये तृप्ति न थाय, मन मारूं खेंचाय,
मारो आतम मस्त बनी जाय बनी जाय... (२)

तारूं अद्‌भुत बिंब निराळुं, पेला चांदा करतां रूपाळुं
तोडे राग ने द्वेष आपे समता अशेष
शुद्ध थाशे आतमना प्रदेश रे प्रदेश... (३)

आत्म कमलमां पार्श्वजी तमने, बेसाड्या छूटो ना सपने,
विक्रम विनवे तने, रहेजो मारी कने
केवल **लब्धि** प्रगटशे मुझने रे...।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन स्तवन

(तर्ज : आये हो मेरी...)

वरदान दे प्रभुजी, शंखेश पार्श्व प्यारे...
कर्मो मीटे मीटे ना, दोषों सभी मीटा दो,
चाहे हो मोक्ष दूरे, समता मुझे मीला दो... ॥१॥

स्वजन मीले, मीले ना, गुरु संग मुझे मीला दो
चाहे न कोई चाहे, तुझसे ही चाह लगा दे... ॥२॥

नयनों मीले मीले ना, दर्शन तेरा दिला दे,
दर्शन की स्पर्शना से, मेरी धडकनें चला दे... ॥३॥

बुद्धि मीले मीले ना, तुम पर पागल बना दे,
शक्ति मीले मीले ना, भक्ति तेरी दिला दे... ॥४॥

दौलत मीले मीले ना, दिलदार तुं बना दे,
साथी मीले मीले ना, हिंमत मुझे दिला दे... ॥५॥

दुःख दर्द हटे हटे ना, सिमरण तेरा दिला दे
अंतर में तुं छिपा है, अंतर सभी मिटा दे... ॥६॥

जन्नत मीले मीले ना, शासन सदा मीला दे,
इस विश्व के जीवों को, तेरी गोद में बिठा दे... ॥७॥

बस, तेरी अेक एक आशा, निराश ना बना दे,
कहे, **'राजयश'** भिक्षुक, भगवान तुं बना दे... ॥८॥

✣ साधारण जिन स्तवन ✣

जिन तेरे चरण की शरण ग्रहूं, हृदय कमल में ध्यान धरत हूं
शिर तुज आण वहुं... जिन ।

तुम सम खोल्यो देव खलक में, पेख्यो नहीं कबहुं... जिन ।
तेरे गुणों की जपुं जप माला, अहनिश पाप दहुं... जिन ।

मेरे मन की तुम सब जानो, क्या मुख बहुत कहुं... जिन ।
कहे **जस विजय** करो त्युं साहिब, ज्युं भव दुःख न लहुं... जिन ।

✤ उवसग्गहरं स्तोत्र ✤

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहर विस निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥ (१)

विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गह रोग मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ (२)

चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होई ।
नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोगच्चं ॥ (३)

तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ (४)

इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण ।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥ (५)

✤ जय वीयराय सूत्र ✤ (प्रार्थनासूत्र)

जय वीयराय ! जगगुरु ! होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।
भव [1]निव्वेओ, मग्गाणु[2]सारिआ, इट्ठ[3]फल सिद्धि (१)

लोग विरु[4]द्धच्चाओ, गुरुजण[5]पूआ, परत्थ[6]करणं च ।
सुहगुरु[7]जोगो, तव्वयण सेवणा[8] आभवमखंडा ॥ (२)

(फिर मस्तक से हाथ नीचे करके बोलें)

वारिज्जइ जइ वि नियाण,-बंधणं वीयराय, तुह समये ।
तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं[9] ॥ (३)

दुक्खक्खओ[10], कम्मक्खओ[11] ।
समाहि मरणं [12]च, बोहि लाभो[13] अ ।
संपज्जउ मह एअं, तुहनाह पणाम करणेणं ॥ (४)

सर्व मंगल मांगल्यं, सर्वकल्याण कारणं ।
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ (५)

(फिर खडे होकर निम्न सूत्र बोलना)

✤ अरिहंत - चेइआणं (चैत्यस्तव) सूत्र ✤

अरिहंत - चेइआणं, करेमि काउस्सग्गं (१)

वंदण वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए,
सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए,
बोहिलाभ-वत्तिआए, निरुवसग्ग-वत्तिआए । (२)

सद्धाए, मेहाए, धिईए,
धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं । (३)

✣ बाद में अन्नत्थ कहें ✣

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, (१) सहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं, (२) एव-माइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो (३) जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि (४) ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि । (५)

एक नवकार का काउस्सग्ग पूर्ण करके हाथ जोड़कर...

"नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः"

पढ़कर नीचेका पाठ बोले -

कल्लाण कंदं पढ़मं जिणिंदं, संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं ।
पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं ॥

तत्पश्चात् खमासमण देकर -

अविधि आशातना मिच्छामि दुक्कडं देकर -

"इच्छकारी भगवन् पसायकरी पच्चक्खाण का आदेश देवें"

(इस प्रकार बोलकर दोनों हाथ जोड़कर पच्चक्खाण का पाठ बोलना)

✣ नवकारसी ✣

उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

पंचांग प्रणिपात (दो हाथ, दो पांव, मस्तक) झुकाकर खमासमण देवें ।



विद्वान वक्ता पू.आचार्यदेव रत्नयशसूरीश्वरजी म.सा.नी संयमजीवननी अनुमोदना गीत (आंबावाडी गुणानुवाद सभामां)

(राग : माई रे माई)

जिनशासननो जयजय होजो, संयम धर्म तो गाजे,
हियडे हियडे संयम केरी, प्रीति अनोखी जागे,
जय जय रत्नयशसूरिनी जय... जय जय रत्नयशसूरिनी जय...(१)

कलकत्तानो विरागी राजेश, जसी मातानो जायो,
संस्कार कांतिनी ज्योत जगावी, सहुनो लाडकवायो
बालपणामां अद्‌भुत योगी...हो...हो...(२) व्रत-नियमोनो रागी,
निर्णय शक्ति अजब-गजबनी, बनी अमर कहानी...
जय-जय... (२)

प्रभु सेवा तो सफली बनती, मळ्या **विक्रमसूरि**
आशिष मेघधाराए वरस्या, विरागीताने साधी,
कोमळ कोमळ **राजयशगुरुनी**...हो...(२) सरळता व्हाली लागी,
गुरुराजना रोमे रोमे, छवाया विनय मूर्ति... जय-जय... (३)

राजगुरु आज्ञा तहत्ति करतां, अंजलिबद्ध तो रहेतां,
अलख निरंजन आनंदघन सम, स्वाध्याय धूणी जगावतां,
ज्योतिषाचार्य- प्रवचन शक्ति...हो...हो... (२)
विशुद्ध संयमी शोभे,
समुदाय प्रेम तो पल पल झलके, गुण अनुमोदनामां राचे...
जय-जय... (४)

सहनशीलता तो पराकाष्ठानी, दुनियाए वखाणी
रस त्यागनो महिमा गजाव्यो, इच्छा न कोई नामनी,
गुरु चरणोनी सेवा करतां...हो... (२) शाता आपे अनोखी,
गुरुराजना प्रथम पट्टधर, जाणे गौतम स्वामि... जय-जय... (५)

पद्मप्रभ मोक्ष कल्याणके जन्म्या, मोक्ष साधनानी लगनी,
अंतम श्वासे श्वासे झझूमी, कर्मोनी कीधी हाणी,
लब्धि-समुदायने रोशन कीधो...हो...हो... (२)
शासन प्रेम तो अनेरो,
क्षीर-नीरपणे मुनिवृंदमां भळीया, **राजेश राजयशमां समाया**

महा वद-१४, रविवार
दि. १९-२-२०२३ (आंबावाडी, अहमदाबाद)

मोक्षवधू को प्राप्त करेंगे...

हा... वही **राजेश**, जो कलकत्ता से
मोह के साथ संग्राम करते हुए
भाटसण (डीसा-गुजरात) आकर मुनि "**रत्नयश**" बनें...
अज्ञान के सामने संग्राम करके, विशिष्ट **श्रुतधर** बनें...
शासन के अनिष्टों के सामने संग्राम करके
गुरुकृपा से **आचार्य** बनें...
स्वदेह में उत्पन्न अनेक रोगों के साथ
पच्चीस वर्ष से संग्राम करके
67 वर्ष तक **अड़िग योद्धा** रहे...
आखिर, सोला रोड महा वद-६, दि. 12-2-2023 को
सुबह 10.40 बजे जिजीविषा के साथ संग्राम खेलकर
जिजीविषा को हराकर...
पुनः महाव्रतों को उच्चरकर... श्री नवकार महामंत्र की
धून के साथ **अजय योद्धा - विजयी** बनें...
कम समय में कर्मो के साथ संग्राम खेलकर
मोक्षवधू को प्राप्त करेंगे...

: विशिष्ट सवाल-जवाब :

प्र.१. जैन तीर्थंकर २४ ही क्यों होते हैं ?

उत्तर एक काल विभाग में ऐसा उत्तम समय २४ ही बार आता है जब तीर्थंकरों का जन्म होता है। एक दिन के घंटे भी चोबीस है यह भी सोचनेका है।

प्र.२. महिला रुप में कोई तीर्थंकर है क्या ? है तो कितने हैं ?

उत्तर स्त्री रुप में तीर्थंकर मल्लिनाथ भगवान एक ही हुए हैं।

प्र.३. क्या तीर्थंकर और भगवान समान (पद) होते है ? दोनों में अंतर क्या हैं ?

उत्तर ज्ञान में कोई फरक नहीं हैं लेकिन तीर्थंकर का अंतर्भाव नमो अरिहंताणं के पद में होता है और मोक्ष में दोनो ही समान रुप से नमो सिद्धाणं पद में आ जाते हैं।

प्र.४. मंदिर में भगवान से क्या माँगना चाहिए ? और क्या नहीं माँगना चाहिए ?

उत्तर जो चीज हमे और कही नही मिलती और भगवान के पाससे ही मिलती है वही मागना चाहिए। अतः स्पष्ट रुप से तो मोक्ष ही मांगना चाहिए लेकिन समाधि नहीं रहती है तो मोक्ष की साधना के रुप में मोक्ष के साधन मांग सकते हैं।

प्र.५. जैन इतने अमिर क्यों होते हैं ?

उत्तर जैन जीवदया का पालन करते हैं, एवं किसी के भी दुःख में हाथ बटाते है एवं परोपकार करते है अतः अमिर हैं।

प्र.६. जैन जीवन पद्धति हमे कैसे पर्यावरण बचाने के बारे में सचेत करती हैं ?

उत्तर भगवान की आज्ञा के मुताबिक तो हवा-पानी-आग-पृथ्वी एवं वनस्पति सब में जीव है अतः उनकी रक्षा करनी चाहिए। कम से कम जीवों को तकलीफ हो उसका ध्यान रखके हमे अपनी जीवनपद्धति बनानी चाहिए। जैन पद्धति से कह सकते है कि Zero Waste से जीवन बनाये।

प्र.७. आज की वैश्विक समस्याओं का समाधान जैन धर्म में है क्या ?

उत्तर आजके समय की मांग के मुताबिक में बाहरी दीखावा छोडके दूसरे लोगो को हमें उनकी समस्याओं को हल करने में यथाशक्ति तन-मन-धन से जितने सक्षम है उस हिसाब से प्रयत्न करना चाहिए यह जैन धर्म हमें सिखाता हैं। समस्याएं हर जमाने रहती है क्योंकि व्यक्ति देश और विश्व ये सब की समस्या के मूल है हिंसा, झूठ, लालच एवं चोरी, भोग का अतिरेक एवं संपत्ति का अत्यधिक मोह, इन सबसे समस्याए बढती है। अतः जरुरी है कि हम भौतिक आकर्षणो को कम करें एवं नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन शैली को प्रस्थापित करें।

● ● ●



J4\E:\Guru_Rajyashsuri (2018)\Jindarshan Book (2023)\Jindarshan Book 16323
1st 17323 • 2nd 24323 • 3rd 30323 • 4th 20423